प्रातःक्लास 15.3.68 ओमशांति "शिवबाबा याद है?"

ओमशांति। रुहानी बाप इस रथ द्वारा रुहानी बच्चों को जो अपने रथ अथवा ऑरगन्स द्वारा सुनते उन्हों प्रति समझाते हैं। यह तो समझते हो बाप के साथ बैठे हैं। यह टीचर भी है ,गुरू भी है। पहले2 बाप है। बाप के आगे जैसे बच्चे होते हैं। बच्चे बाप को घड़ी2 हाथ नहीं जोड़ेंगे। अगर जोड़ते हैं तो समझता हूँ यह बाप नहीं समझते हैं। कोई साधु–संत आदि समझते हैं क्योंकि जन्म जन्मांतर से हिरे हुए हैं ना। गुरुओं ,साधुओं आदि के पांव पड़ने में। पूरी रीत समझा न है। जिनको बाप समझाते हैं वह समझते हैं। बाप आये ही हैं वर्षा देने। तो बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। कल्प2 बाप आते हैं वर्षा देने। इसमें डरने की कोई बात ही नहीं। साधु आदि से डरते हैं कि कहां सराप न दे दे। गुरूजी नाराज न हो। तुम बच्चे तो जानते हो बाप बहुत2 मीठा है। बाप आये ही हैं फिर से आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। पहले2 तो तुमको ब्राह्मण बनाना होता है। ऊँच ते ऊँच कुल है ब्राह्मणों का। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भी तो हैं ना। ब्रह्मा है ग्रेट2 ग्रैण्ड फादर। तो बच्चे भी जरूर होंगे ना। यह समझ की बात है। भक्तिमार्ग में तो हैं बेसमझ। जो आया वह कह देते। जो आया वह कर देते। क्या2 कहते रहते। महर्षि भी कहते हैं खाओ–पीओ ,मौज करो। यह सभी आदतें आपे ही मिट जावेंगी। अभी सिवाय योग के तो कोई आदत मिट नहीं सकती। मिटाने वाला तो जरूर चाहिए ना। इस समय सभी हैं पतित तमोप्रधान। तुम कहेंगे यह ल0ना0 का यह अंतिम जन्म है। भिन्न2 नाम, रूप ,देश,काल में पतित हैं। इसमें बड़ी समझ की बात है। अभी देखो गाते है हम निगुर्ण हारे में कोई गुण नाहीं। निर्गुण अर्थ नहीं समझते हैं। अभी कोई में गुण नहीं। विवेक भी कहते हैं रावणराज्य में बेगुणी बन जाते हैं। निर्गुण बालक की भी सोसाइटी कितनी बड़ी है। कितने फन्ड निकालते हैं। अभी निगुर्ण बालक। उनको (तो) गुणवान बनाना है ना। वास्तव में निगुर्ण तुम थे। तुम्हारे में कोई गुण नहीं था। पतित कांटे थे। अभी तुम आये हो गुणवान बनने। वह तो समझते हैं निर्गुण बालक भी बहुत अच्छी है। और ही नीचे गिरते जाते हैं। ड्रामा अनुसार गिरने का ही है। चढ़ती कला करने वाला तो एक ही बेहद का बाप है। बाप द्वारा ही सभी का भला होता है। अभी सबका भला तो सतयुग में ही होता है और शांतिधाम में होता है। यह तो है दुःखधाम। बच्चे सारी ड्रामा के चक्र को समझ गए हैं। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। पहले तो बाप है ना स्वदर्शनचक्रधारी। 84के चक्र को बाप ही जानते हैं। तुमको भी स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं ;परंतु अलंकार न बाप है न तुमको है। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बच्चे यह भी समझते हैं देवताओं में कोई ज्ञान नहीं है ;परंतु उनको यह अलंकार दिये हैं। तुमको तो दे नहीं सकते ;क्योंकि तुम भी पुरुषार्थी हो। सभी को तो पूरी धारणा नहीं होती है। जब पूरे पक्के हो जाते हैं तब बुद्धि में सारा ज्ञान रहता है। यह है ज्ञान की बात। उन्होंने फिर स्वदर्शनचक्र को हिंसक बना दिया है। दिखाते हैं कृष्ण स्वदर्शनचक्र से असुरों को मारते रहते हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। जैसे मैडचैप्स हैं। तुमको ..... सभी चित्रों आदि का अर्थ बताते हैं। वह है अनराइटियस। यह है राइटियस। जो कुछ भी जानते नहीं हैं वह क्या आकर करेंगे? यह तो तुम बच्चे ही समझते हो। इस रथ पर रथी बैठ नालेज सुनाते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। इतने सभी अनेक धर्म कैसे वृद्धि को पाते हैं। पिछाड़ी में सभी का विनाश होता है। फिर बाप आकर वही धर्म स्थापन करते हैं। सेकेंड व सेकेंड आत्मा जो एक्ट करती है सो हूबहू फिर वही एक्ट करेंगी। इसमें मूंझने ही बिल्कुल दरकार नहीं। दुनियां तो यही है जो नई और पुरानी होती है और कोई दुनियां है नहीं। वह लोग तो समझते हैं ऊपर में भी कोई दुनियां है। कहते थे चंद्रमा में प्लाट लेंगे। (यह) करेंगे। यह है माया का अति घमण्ड। साइंस का अति घमंड। कहां2 जाते रहते हैं। आगे चल नई2 बातें .....रहेंगे। सेकेंड व सेकेंड नया चलता रहता है। भल टेम्पररी अच्छा रूप भी कर के देखेंगे ;परंतु फिर पिछाड़ी ....विनाश भी जरूर होना है। इसको कहा जाता है माया का पाम्प। इन सभी बातों को अच्छी रीत समझना है। .....कर धारण करना है। यह तो जानते ही हो बाबा आया ही है पतित दुनियां का विनाश ,पावन दुनियां

की स्थापना करने। स्थापना ,विनाश और पालना। बाकी शंकर द्वारा विनाश करावे। यह तो ला नहीं कहती। वह क्या करेंगे? यह तो उनकी महिमा में चित्र बना दिया है। जैसे हनुमान की महिमा दिखाते हैं। फिर ऐसा है थोड़े ही। शंकर की महिमा करते हैं। कुछ भी नहीं है। रावण का चित्र बनाते हैं। रावण क्या चीज है कुछ भी समझते नहीं। तुम भी नहीं समझते थे। यह रथ भी नहीं समझता था। इनका रथी समझते हैं जो अभी समझा रहे हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। आत्मा मानती भी है बरोबर हम पतित बन भी गए हैं। अभी बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तुमको ही पुरुषार्थ करना है। बाकी वह गुरू लोग तो ढेर हैं। कितने उन्हों के फालोअर्स हैं। थोड़े ही इतना जल्दी छोड़ेंगे। उनका तो तुमको कुछ भी खयाल नहीं करना है। तुम सभी को शांतिधाम का रास्ता बताओ। चक्र के राज को भी तुम जानते हो। जो जहां का है उनको वहां ही जाना है। अपना2 पार्ट हरेक को बजाना ही है। इसमें मूंझने की बिल्कुल दरकार नहीं। पुरुषार्थ कराने वाला रथी और पुरुषार्थ करने वाला यह है रथ। मैं तुमको पुरुषार्थ कराता हूँ तो इनका आटोमेटिकली पुरुषार्थ हो जाता है। ऐसे नहीं कोई मैं प्रेरणा देता हूं। प्रेरणा का अर्थ और कोई है नहीं। प्रेरणा अर्थात् विचार नहीं। बाकी प्रेरणा और कोई चीज नहीं। यह तो तुम बच्चों को नालेज मिलती है। नालेज माना नालेज। . याद की यात्रा का भी नालेज है। चक्र की भी नालेज है। बाप कहते हैं बच्चे मामेकम् याद करो। यह है याद की रीयल ज्ञान। जो है ही बाप के पास। वही ज्ञान का सागर है। बाप कहते हैं मुझे बुलाते भी हो ना। ज्ञान सागर को सर्वव्यापी कहना, मिट्टी में मिला देना यह तो मूर्खता हुई ना। कितनी ग्लानी कर दी है। अभी (उ)न सभी का विनाश ड्रामा में नूंध हुआ है। बाप कहते हैं मैं रहमदिल भी हूँ। ऐसा न हो विनाश हो और फिर हास्पिटल में फथकते रहें। नहीं। चीजें ही ऐसी बनाते रहते हें जो सेकेंड में विनाश हो जाये। सेकेंड में जीवनमुक्ति होती है तो सेकेंड में विनाश भी चाहिए ना। तुमको ज्ञान भी देते रहते हैं। यह भी ट्रायल करते हैं। बारूद आदि बनाते जाते हैं यह है बेहद की बात। यह सूर्य–चाँद आदि इस बड़े (मा)ण्डवे की शोभा है। दिन और रात भी जरूर चाहिए ना। यह है बेहद की बात। पुरानी दुनियां से फिर नई दुनियां भी जरूर बनेगी। जास्ती मनुष्य हा जाये तो फिर खाना आदि कहां से आये? अभी तो तत्व भी तमोप्रधान हो गई है। समुद्र भी देखो कितना वुख लेते हैं। स्टीमर आदि डूब जाते हैं। कैसे2 अकाले मृत्यु होती है। वहां तो कोई दुःख की बात ही नहीं। उसका तो नाम ही है हैविन। यह ल0ना0 हैविन के मालिक हैं ना। अभी तुमको एक्युरेट नालेज मिलती है। तुम कुछ भी जानते ही नहीं थे तो पूछेंगे फिर क्या?बाप आपे ही सब कुछ बताते रहते हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बाकी इन प्रश्नों आदि में टाइम क्यों वेस्ट करते हो? जरूरी पुरुषार्थ तो करो। पुराना (क)चरा निकलो। 84 का चक्र भी तुमने ही लगाया है। यह समझ तो बुद्धि में आ गई है। यह चक्र की नालेज बुद्धि में हो, बाप की याद हो तब ही आत्मा यह शरीर छोड़ जाये। ऐसी अवस्था हो तब पद भी पा (स)कते हैं। पढ़ाई पढ़ते2 ट्रांसफर हो जाना है। यह तो एक क्लास है। दूसरे क्लास में ट्रांसफर होते हैं। तुम मृत्युलोक से अमर(लो)क में ट्रांसफर होते हो। तुमको खातरी है कल्प2 हम बाप से नालेज सुनते हैं। फिर भूल जाते....। ड्रामा में नूंध है। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। यह गीता का एपीसुड चल रहा है पुरुषोत्तम संगमयुग है ना। यह युग बदल रहा है। बदलना माना नीचे से ऊँच बनना है। अभी हमारे दुःख के दिन गए। (ब)च्चों को आसरा देते हैं, बाकी थोड़ा समय है। विनाश के बाद शांति हो जावेगी। बाकी थोड़े ही कि सभी .....मिलकर एक हो जावेंगे। यह तो झाड़ है। नम्बरवार आते रहते हैं। सभी धर्म मिलकर एक क्या हो जाये।.....जो धर्म स्थापन करते वह तो है ही एक। इन बिचारों को बिल्कुल ही पता नहीं। पत्थर बुद्धि हैं। तुम (बच)चों को वंडर खाना चाहिए। यह क्या कहते हैं। कौन सा एक धर्म हो जाये। वह तो बताओ। जिसको जो .....वह कह देते। तुमको तो अभी अथॉर्टी मिली है। तुम जाकर पूछ सकते हो एक धर्म किसको

कहते हो? आगे कब हुआ है जो फिर हो। विश्व में शांति तो नई दुनियां सतयुग में थी। वहां तो दुःख की कोई बात हो न सके। शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है। सप्र ने डसा। राम की सीता चुराई गई। आठवां गर्भ हुआ। यह तो छी2 हो गई। वहां तो एक ही गर्भ होता है। आठवां फिर काहे (का)? यह सब भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग की बातें। इसलिए बाप कहते हैं हमको ज्ञान दे लिए आना पड़ता है। यह सुख–दुःख का खेल बना हुआ है। और कोई की ताकत नहीं जो यह समझा सके। तुम्हारे में भी सभी जैसे नहीं समझते हैं पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। अभी टाइम पड़ा है। हार्टफेल न होना चाहिए। पुरुषार्थ कर फालो करो। टीचर की पढ़ाई धारण करनी चाहिए। कल्याणकारी बच्चों को औरों का भी कल्याण करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते बुद्धि का योग बाप के साथ लगाओ। जैसे आशुक–माशुक होते हैं ना। भोजन खाते रहेंगे, सामने आशुक की सिकल आ जावेंगे। वह विकार के लिए नहीं होते हैं। सिकल पर आशुक होते हैं। काम करते रहेंगे, आशुक सामने खड़ा है। फिर गुम हो जाता है। दीदार भी ऐसे ही होता है। यह तो समझ की बात है। बाप पढ़ाते हैं। बाप को तो तुम इन आंखों से नहीं देख सकते हो। न आत्मा को देख सकते हो। दिव्य दृष्टि से देख सकते हो ;परंतु देखने से क्या फायदा? आत्मा छोटा स्टार है। उनको देखने से पद नहीं मिलता है। यह तो पढ़ाई है। मूल बात है योग की। जिससे ही पावन बन सकते हैं। तुमको मेहनत भी इसमें ही लगती है। भगवानुवाच बच्चे अपन को आत्मा समझो। फिर भी कहते हैं भूल जाते हैं। बाप तुमको डायरैक्शन देते हैं। उन पर चलना है। यह तो समझते हो सभी नहीं समझेंगे। नम्बरवार हैं। फिर भी पुरुषार्थ कराते रहेंगे। तुम समझते हो यह सारी दुनियां कोस घर है। एक/दो को कोस करते हैं। तभी तो सन्यासी लोग भागते हैं। दोनों की छुरी इकट्ठी चलेगी। एक थोड़े ही विकार में जा सकते हैं। बाप कहते हैं तुम पवित्र गृहस्थ मार्ग में थें अभी अपवित्र हो। फिर पवित्र बनो। मैं ऑर्डिनेंस निकालता हूं। इन काम को जीतो। मामेकम् याद करो तो तुम्हारे जन्म जन्मांतर के विकर्म विनाश हो जावेंगे। धीरे2 तुम विकारी बने हो। पाप चढ़ते गए हैं। अभी कोई भी पाप नहीं करना है। मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया तो बहुत दंड पड़ेगा। सदगुरू का निंदक .....गुरू तो (गि)राते ही रहते हैं। बाप आकर पावन बनाते हैं फिर तुम पतित कैसे बने हो? बाप आकर समझाते हैं भक्ति मार्ग है ही पतित मार्ग। सीढ़ी उतरना ही है। सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो होना ही है। यह है ही कांटों का झाड़। फिर तुम फूलों के झाड़ में जावेंगे। कोई भी बात में मूंझने की दरकार नहीं है। बाप कहते हैं तुम इस ड्रामा में आलराउंड पार्ट बजाते हो। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अभी बाप ने समझाया है। कितनी अच्छी समझानी है। कितनी दिल खुशी होती है। बाप हमको पढ़ाते हैं। बाबा निराकार है तो हम भी निराकार बन जावेंगे। शांतिधाम चले जावेंगे। बाप आया है हमको घर ले जाने। उनको बुलाया है कि आकर पावन बनाकर अपने घर ले चलो। देखो ड्यूटी कैसी है? तुम खुद पुकारते हो बाबा आकर हमको पावन बनाओ। रावणराज्य से लिबरेट करो। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही तमोप्रधान हुई है। बाप कहते हैं और सभी बातों को छोड़ो। और कोई संशय में मत जाओ। मूल बात है बाप को याद करो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। शरीर का भान ही नहीं। भाई–बहिन ही समझो। फिर भी क्रिमिनल एसाल्ट कर देते हैं। तो बाप कहते हैं अच्छा भाई2 समझो तो फिर नाम–रूप में नहीं आवेंगे। इतनी मेहनत करो। बड़ी मेहनत है। कोई मुश्किल ठहर सकते हैं। मेहनत बिगर थोड़े ही विश्व के मालिक बनेंगे। किसको स्वप्न में भी नहीं होगा। ....भी एकदम तमोप्रधान पापात्मा अजामिल जैसे विकारी जो बने हैं वहीं फिर सतोप्रधान पावन बनते हैं। अभी बाप कहते हैं याद करो तो पाप कट जावेंगे। जो देवताएं थे उन्हों की ही 84जन्मों की कहानी सुनाते हैं। मूंझने की कोई बात ही नहीं। फिर भी माया भुला देती है। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रुहानी (बाप) का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। ओम।